ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे
निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 28 अंकः 34 बुलेटिन अवधिः : 27 अप्रैल – 1 मई, 2019 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 26 अप्रैल, 2019

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय व मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	27/04/2019	28/04/2019	29/04/2019	30/04/2019	01/05/2019
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	2
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	25	26	26	27	27
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	15	15	16	16	16
बादल आच्छादन	साफ	साफ	साफ	साफ	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	70	70	70	70	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	30	30	30	30	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	008	008	006	006
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	पूर्व–दक्षिण–पूर्व

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (19 – 25 अप्रैल, 2019) में आसमान साफ रहने के साथ मध्यम से घने बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 18.5 से 25.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 7.8 से 12.9 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल	अवस्था	कृषि मौसम सलाह समिति द्वारा किसानो हेतु कृषि सलाह
गेहूँ एवं दलहनी फसलें	कटाई	गेहूँ एवं दलहनी फसलों की कटाई एवं मड़ाई का कार्य करें।
लोबिया व फ्रासबीन	–	लोबिया व फ्रासबीन मे जड़ एवं तना गलन रोग की रोकथाम हेतु कार्बन्डाजिम 500 ग्राम/है0 की दर से प्रयोग करे।
सॉवा (मादिरा/झंगुरा)	बुवाई	मध्यम पर्वतीय क्षेत्रों में, अप्रैल में सॉवा (मादिरा/झंगुरा) की प्रजातियों जैसे वी0एल0 मादिरा–172, वी0एल0 मादिरा–207 तथा पी0आर0जे01 की बुवाई पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25से0मी0 एवं पौधे से पौधे की दूरी 10से0मी0 पर करें। जिसमें 8–10 कि0ग्रा0/है0 बीज उपयुक्त होगा। नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश का 40:20:20 के अनुपात में प्रयोग करें। जिसमें नत्रजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा का बुवाई के साथ प्रयोग करें। नत्रजन की शेष बची आधी मात्रा बुवाई के एक महीने बाद टॉप ड्रेसिंग के रूप में प्रयोग करें।
प्याज	–	प्याज मे पत्ती झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु टेबुकोनाजोल या डिफिनोकोनाजोल या प्रोपीकोनाजोल का 500 मिली0 प्रति है0 की दर से किसी सर्वांगी कीटनाशी एवं स्टीकर के साथ मिलाकर छिड़काव करे।
बैंगन, टमाटर, शिमलामिर्च	रोपाई	ऊँचाई वाले पर्वतीय क्षेत्र में तक बैंगन, टमाटर, शिमलामिर्च का प्रतिरोपण करें तथा आवश्यकतानुसार जीवन रक्षक पानी पौधों को सुलभ करायें। साथ ही साथ नमी संरक्षण की समुचित व्यवस्था रखें।
फ्रासबीन	बुवाई	सिंचित घाटी क्षेत्रो में सब्जी फ्रासबीन किस्म अर्का कोमल या कन्टेण्डर की बुवाई करे।
आलू	–	यदि आलू की फसल अंकुरित हो गयी है तथा 20–25 दिन की फसल हो तो उसमें यूरिया की टॉप ड्रेसिंग कर मिट्टी चढ़ाए। नमी संरक्षण होतु नालियों में 8–10 से0मी0 पलवार पदार्थ की मोटी परत बिछा दें।
उद्यान प्रबन्ध	–	मध्यम एवं निचले पर्वतीय क्षेत्रों में आडू के पर्णकुंचन रोग की रोक–थाम के लिए कीटनाशक रसायनों का द्वितीय छिड़कारें। नर्सरी में ग्राफ्टिंग किये गये पौधों में मूल वृंत से निकलने वाली शाखाओं को तोड़कर अलग करें। फल अच्छादन होने के उपरान्त मैंगो हौपर के प्रकोप होने की स्थिति में इमिडाक्लोरपिड का 3 मि0ली0/10लीटर के हिसाब से आम में छिड़काव करें।
पशुपालन	–	पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15 सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

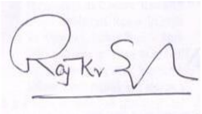

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर